श्री दुर्गाष्टाक्षर कवचं

श्री दुर्गाष्टाक्षर कवचं

श्री भैरव उवाच |
अधुना देवि वक्ष्येऽहं कवचं मंत्रगर्भकं |
दुर्गायाः सारसर्वस्वं कवचेश्वरसंज्ञकं || 1 ||

परमार्थप्रदं नित्यं महापातकनाशनं |
योगिप्रियं योगिगम्यं देवानामपि दुर्लभं || 2 ||

विना दानेन मंत्रस्य सिद्धिर्देवि कलौ भवेत् |
धारणादस्य देवेशि शिवस्त्रैलोक्यनायकः || 3 ||

भैरवी भैरवेशानी विष्णुर्नारायणो बली |
ब्रह्मा पार्वति लोकेशो विघ्नध्वंसी गजाननः || 4 ||

सेनानीश्च महासेनो जिष्णुर्लेखर्षभः प्रिये |
सूर्यस्तमोऽपहो लोके चंद्रोऽमृतविधिस्तथा || 5 ||

बहुनोक्तेन किं देवि दुर्गाकवचधारणात् |
मर्त्योऽप्यमरतां याति साधको मंत्रसाधकः || 6 ||

कवचस्यास्य देवेशि ऋषिः प्रोक्तो महेश्वरः |
छंदोऽनुष्टुप् प्रिये दुर्गा देवताऽष्टाक्षरा स्मृता |
चक्रिबीजं च बीजं स्यान्मायाशक्तिरितीरिता || 7 ||

ॐ मे पातु शिरो दुर्गा ह्रीं मे पातु ललाटकं |
दुं नेत्रेऽष्टाक्षरा पातु चक्री पातु श्रुती मम || 8 ||

मं ठं गंडौ च मे पातु देवेशी रक्तकुंडला |
वायुर्नासां सदा पातु रक्तबीजनिषूदिनी || 9 ||

लवणं पातु मे चोष्ठौ चामुंडा चंडघातिनी |
भेकी बीजं सदा पातु दंतान्मे रक्तदंतिका || 10 ||

ॐ ह्रीं श्रीं पातु मे कंठं नीलकंठांकवासिनी |
ॐ ऐं क्लीं पातु मे स्कंधौ स्कंदमाता महेश्वरी || 11 ||

ॐ सौः क्लीं मे पातु बाहू देवेशी बगलामुखी |
ऐं श्रीं ह्रीं पातु मे हस्तौ शिवाशतनिनादिनी || 12 ||

सौः ऐं ह्रीं पातु मे वक्षो देवता विंध्यवासिनी |
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं पातु कुक्षिं मम मातंगिनी परा || 13 ||

ॐ ह्रीं ऐं पातु मे पार्श्वे हिमाचलनिवासिनी |
ॐ स्त्रीं ह्रूं ऐं पातु पृष्ठं मम दुर्गतिनाशिनी || 14 ||

ॐ क्रीं ह्रुं पातु मे नाभिं देवी नारायणी सदा |
ॐ ऐं क्लीं सौः सदा पातु कटिं कात्यायनी मम || 15 ||

ॐ ह्रीं श्रीं पातु शिश्नं मे देवी श्रीबगलामुखी |
ऐं सौः क्लीं सौः पातु गुह्यं गुह्यकेश्वरपूजिता || 16 ||

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं ह सौः पायादूरू मम मनोन्मनी |
ॐ जूं सः सौः जानु पातु जगदीश्वरपूजिता || 17 ||

ॐ ऐं क्लीं पातु मे जंघे मेरुपर्वतवासिनी |
ॐ ह्रीं श्रीं गीं सदा पातु गुल्फौ मम गणेश्वरी || 18 ||

ॐ ह्रीं दुं पातु मे पादौ पार्वती षोडशाक्षरी |
पूर्वे मां पातु ब्रह्माणी वह्नौ पातु च वैष्णवी || 19 ||

दक्षिणे चंडिका पातु नैर्ऋत्ये नारसिंहिका |
पश्चिमे पातु वाराही वायव्ये मापराजिता || 20 ||

उत्तरे पातु कौमारी चैशान्यां शांभवी तथा |
ऊर्ध्वं दुर्गा सदा पातु पात्वधस्ताच्छिवा सदा || 21 ||

प्रभाते त्रिपुरा पातु निशीथे छिन्नमस्तका |
निशांते भैरवी पातु सर्वदा भद्रकाळिका || 22 ||

अग्नेरंबा च मां पातु जलान्मां जगदंबिका |
वायोर्मां पातु वाग्देवी वनाद्वनजलोचना || 23 ||

सिंहात् सिंहासना पातु सर्पात् सर्पांतकासना |
रोगान्मां राजमातंगी भूताद्भूतेशवल्लभा || 24 ||

यक्षेभ्यो यक्षिणी पातु रक्षोभ्यो राक्षसांतका |
भूतप्रेतपिशाचेभ्यः सुमुखी पातु मां सदा || 25 ||

सर्वत्र सर्वदा पातु ॐ ह्रीं दुर्गा नवाक्षरा |
इत्येवं कवचं गुह्यं दुर्गासर्वस्वमुत्तमं || 26 ||

मंत्रगर्भं महेशानि कवचेश्वरसंज्ञकं |
वित्तदं पुण्यदं पुण्यं वर्म सिद्धिप्रदं कलौ || 27 ||

वर्म सिद्धिप्रदं गोप्यं परापररहस्यकं |
श्रेयस्करं मनुमयं रोगनाशकरं परं || 28 ||

महापातककोटिघ्नं मानदं च यशस्करं |
अश्वमेधसहस्रस्य फलदं परमार्थदं || 29 ||

अत्यंतगोप्यं देवेशि कवचं मंत्रसिद्धिदं |
पठनात्सिद्धिदं लोके धारणान्मुक्तिदं शिवे || 30 ||

रवौ भूर्जे लिखेद्धीमान् कृत्वा कर्माह्विकं प्रिये |
श्रीचक्रांगेऽष्टगंधेन साधको मंत्रसिद्धये || 31 ||

लिखित्वा धारयेद्बाहौ गुटिकां पुण्यवर्धिनीं |
किं किं न साधयेल्लोके गुटिका वर्मणोऽचिरात् || 32 ||

गुटिकां धारयन्मूर्ध्नि राजानं वशमानयेत् |
धनार्थी धारयेत्कंठे पुत्रार्थी कुक्षिमंडले || 33

तामेव धारयेन्मूर्ध्नि लिखित्वा भूर्जपत्रके |
श्वेतसूत्रेण संवेष्ट्य लाक्षया परिवेष्टयेत् || 34 ||

सवर्णेनाथ संवेष्ट्य धारयेद्रक्तरज्जुना |
गुटिका कामदा देवि देवनामपि दुर्लभा || 35 ||

कवचस्यास्य गुटिकां धृत्वा मुक्तिप्रदायिनीं |
कवचस्यास्य देवेशि गुणितुं नैव शक्यते || 36 ||

महिमा वै महादेवि जिह्वाकोटिशतैरपि |
अदातव्यमिदं वर्म मंत्रगर्भं रहस्यकं || 37 ||

अवक्तव्यं महापुण्यं सर्वसारस्वतप्रदं |
अदीक्षिताय नो दद्यात्कुचैलाय दुरात्मने || 38 ||

अन्यशिष्याय दुष्टाय निंदकाय कुलार्थिनां |
दीक्षिताय कुलीनाय गुरुभक्तिरताय च || 39 ||

शांताय कुलशांताय शाक्ताय कुलवासिने |
इदं वर्म शिवे दद्यात्कुलभागी भवेन्नरः || 40 ||

इदं रहस्यं परमं दुर्गाकवचमुत्तमं |
गुह्यं गोप्यतमं गोप्यं गोपनीयं स्वयोनिवत् || 41 ||

इति श्रीदेवीरहस्यतंत्रे श्री दुर्गा कवचं |